सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास
   - a. भाषायी कौशलों का विकास
   - b. भाषायी कौशलों का महत्व
   - c. भाषा के कौशल
   - d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
   - e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
   - f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
   - g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास
   - a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
   - b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
   - c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
   - d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
   - e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
   - f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
   - a. लेखन कौशल
   - b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
   - c. लेखन कौशल का महत्व
   - d. लेखन शिक्षण का समय
   - e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
   - f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
   - g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग

(1) ग्रामोफोन—ग्रामोफोन से मनोरंजन ही नहीं वरन् शिक्षण कार्य को भी आसान बनाया जा सकता है, इससे बालकों के उच्चारण को शुद्ध किया जा सकता है। इससे बालकों को सुन्दर गीत, कविताएँ एवं पद्यांशों को सुनाकर ज्ञानार्जन कराया जा सकता है। विभिन्न महापुरुषों के उपदेशों को सुनाकर नैतिक शिक्षा दी जा सकती है।

(2) रेडियो—रेडियो के माध्यम से हम आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रमों को बालकों को उपलब्ध करा सकते हैं। रेडियो का आज भी शिक्षा के क्षेत्र में महत्व कम नहीं है। इसके माध्यम से देश-विदेश के विद्वानों का भाषण, देश के विद्वानों के प्रवचन तथा स्वयं आकाशवाणी भी बालकों के लिए शैक्षिक भाषा उन्नयन करने के कार्यक्रम प्रसारित करती है जो बालकों के लिए अत्यन्त लाभकारी कार्यक्रम होते हैं। इससे बालकों की भाषा का उच्चारण अभ्यास कराया जा सकता है, वाक्यों में प्रयोग करना सिखा सकते हैं। इसको सुनकर बालकों में अपने विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का मौका मिलता है।

(3) टेप रिकॉर्डर—यह बड़ा लाभकारी यन्त्र है। इसमें किसी के लक्षण या कथन को उनकी मूल आवाज में रिकॉर्ड कर लिया जाता है, आवश्यकतानुसार ध्वनि को सुना जा सकता है। इस यन्त्र द्वारा हिन्दी भाषा शिक्षण में काफी लाभ मिला है। शब्द उच्चारण, किसी महापुरुष की जीवनी, कविता, वाक्यों में प्रयोग आदि को आसानी से सुना जा सकता है तथा महत्वपूर्ण पाठों को टेप की सहायता से आसानी से पढ़ाया जा सकता है। छात्रों को जब भी आवश्यक हो, सुनाकर पुनः सिखाया जा सकता है। आजकल भी इसका उपयोग पूर्ववत् ही है।

(4) सिनेमा—सिनेमा द्वारा अध्यापकीय कार्य को जितना आसान बनाया जा सकता है, उतना किसी और से सम्भव नहीं है। सिनेमा में जो देखा जा रहा है दर्शक को पूर्ण सत्य प्रतीत होता है और इसमें दृश्य को आँखों से देखने के साथ उसकी आवाज भी सुनाई देती है तथा वास्तविकता की प्रतीति होती है, जैसे—झरना बह रहा है तो पानी की कल-कल, छल-छल भी सुनाई देती है। इसी प्रकार एक देश के विभिन्न प्रान्तों के रीति-रिवाज, रहन-सहन व खान-पान के बारे में बताया जाय तो केवल काल्पनिक होगा, लेकिन सिनेमा के माध्यम से यह एकदम वास्तविक ही प्रतीत होता है। इसमें ऐतिहासिक, धार्मिक चित्र जनता या बालकों के उत्तम चरित्र निर्माण में सहायक होंगे तथा इससे हमारी भावनाओं, प्रवृत्तियों तथा उद्वेगों को भी शान्त किया जा सकता है। वास्तव में सिनेमा बालकों के भाषा शिक्षण में अतिउपयोगी सिद्ध हुआ है।

Scanned with CamScanner

(5) टेलीविजन—दूरदर्शन कार्यक्रम आज के युग की एक महानतम खोज है। जहाँ एक ओर रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम को केवल हम सुन ही सकते हैं, लेकिन इसमें उस कार्यक्रम से सम्बन्धित सभी शारीरिक भावों को भी होते हुए देख सकते हैं। इसकी सहायता से घर बैठे संसार के दर्शन कर सकते हैं। इसके माध्यम से आजकल घर बैठे शिक्षा का प्रबन्ध किया जा सकता है। इगनु खुला विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम इसका उपयोग कर देश के बेरोजगार व रोजगार अध्ययनशील शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। यदि हम प्राथमिक बालकों को बता रहे हैं कि गंगा हमारी पवित्र नदी है तथा यह हिमालय पहाड़ से निकलती है, उद्‌गम स्थल गंगोत्री है जो कोसों मील ऊँचाई पर है तथा पठारी भागों से निकलकर मैदानी भागों से होती हुई बंगाल की खाड़ी में जा मिलती है तो इन सबको चलचित्र में बताया जाय, पहाड़ों से लेकर बंगाल की खाड़ी तक के प्रमुख भागों को दिखाया जाय तो बालकों को देखकर, सुनकर स्थायी ज्ञान प्राप्त हो जायेगा।

(6) वीडियो—आज के वर्तमान युग में वीडियो का अत्यधिक महत्व बढ़ा है। इसके द्वारा किसी भाषण को चित्र सहित टेप करके पुनः हूबहू दिखाया जा सकता है और जब चाहो तब इसका प्रयोग किया जा सकता है। बालकों को उच्चारण ठीक करने, वाक्यों में प्रयोग में, रीति-रिवाजों व रहन-सहन की जानकारी के लिए इसका अत्यधिक उपयोग किया जा सकता है। धार्मिक व ऐतिहासिक चित्रण आदि में इसका अधिक उपयोग सम्भव हो सका है।

इस प्रकार भाषा शिक्षण में इन दृश्य-श्रव्य साधनों का आज के युग में काफी अधिक महत्व बढ़ा है। शिक्षकों के लिए भी काफी हद तक भाषा शिक्षण में सहायता इनसे मिली है।

Scanned with CamScanner